राश्ट्रीय अणुव्रत लेखक सम्मेलन

''अनैतिकता के अंधकार को दूर कर नैतिकता का प्रकाश फैलाएं''

- आचार्यश्री महाप्रज्ञ

लाडनूं, 13 अक्टूबर।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में दो दिवसीय (13-14 अक्टूबर) राष्ट्रीय अणुव्रत लेखक सम्मेलन अणुव्रत महासमिति नई दिल्ली व अणुव्रत समिति लाडनूं द्वारा आयोजित व प्रवास व्यवस्था समिति लाडनूं के अध्यक्ष श्री शांतिलाल बरमेचा व श्री राकेश कठोतिया द्वारा प्रोयाजित की गई। जिसमें देश भर से अनेक साहित्यकारों, लेखकों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय अणुव्रत लेखक सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने फरमाया कि मनुष्य की शक्ति से कहीं ज्यादा शब्द की शक्ति काम करती है। महाराणा प्रताप के मानस को एक कवि की पंक्ति ने बदल दिया था। कवि का काव्य और धनुर्धर का बाण लक्ष्य के सिर को कंपित नहीं करे तो उसका कोई महत्व नहीं।

देश भर से आए साहित्यकारों का शब्द की साधना करने के लिए आह्वान करते हुए आचार्यप्रवर ने फरमाया कि शब्दों की प्रस्तुति इस तरह से करें कि वे अभिमंत्रित होकर समाज और सत्ताधीश की बेहोशी तोड़े व सुप्ति को हटाकर उन्हें जागृत करे। लेखक वर्ग ऐसे शक्तिशाली वर्ग के रूप में सामने आए कि वह सत्ता के समक्ष सशक्त प्रतिपक्ष की भूमिका में खड़ा हो जाए।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि शरीर और समाज दोनों में जिस तहर एन्टीबॉडीज को होना जरूरी है उसी तरह सत्ता के समक्ष भी इसका निर्माण करें। उन्होंने स्वस्थ व्यक्ति स्वस्थ समाज और स्वस्थ अर्थव्यवस्था को समाज की समस्त समस्याओं का हल बताते हुए कहा कि जब तक अर्थव्यवस्था को स्वस्थ नहीं बनाया जाएगा, समस्याएं पैदा होती रहेंगी। सत्ता एवं धन संग्रह दोनों भय का निर्माण करते हैं और जहां भय होता है वहां शस्त्रों का निर्माण भी अवश्य होगा। संयुक्त राष्ट्र संघ में अणुव्रत के लोगों ने निरस्त्रीकरण की मांग रखी जिसका समर्थन अन्य लोगों ने भी किया। लोगों ने यहां तक भी कहा कि अणुबम का प्रतिपक्ष कोई बन सकता है तो वह अणुव्रत ही है।

उन्होंने अणुव्रत के लेखकों से कहा कि वे एक ऐसी शक्ति पैदा करें जो हिंसा व अनैतिकता के अंधकार को दूर करके नैतिकता के प्रकाश को फैलाएं। इससे पूर्व सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात पत्रकार व लेखक तथा पद्मश्री से सम्मानित मुजफ्फर हुसैन ने कहा कि एक मार्च 1949 वह दिन था जब गांधीजी की आत्मा बनकर आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का शुभारंभ किया। उन्होंने अणुव्रत को अंधेरे से उजाले की ओर, धूप से छाया की ओर तथा अनैतिकता से नैतिकता की ओर ले जाने वाला बताते हुए कहा कि छोटे-छोटै संकल्प छोटे होते हुए भी व्यक्ति को दुनिया मे ंमहान बना सकते हैं, सिर्फ उनके क्रियान्वयन की आवश्यकता है। उन्होंने पंचशील संपूर्ण क्रांति, सर्वोदय और एकात्म मानववाद सभी को अणुव्रत आंदोलन का ही एक रूप बताया और कहा कि हिन्दुस्तान कभी भी नैतिकता के ऐसे आन्दोलन से खाली नहीं रहा। उन्होंने हिंसा और जनसंख्या की समस्या से दुःखी दुनिया में अणुव्रत की सीढ़ी को महत्त्वपूर्ण बताया तथा कहा कि स्वामी विवेकानन्द की तरह इस देश में आज आचार्य

महाप्रज्ञ की आवाज गुंज रही हैं उन्होंने साहित्यकारों से कहा कि वे उठें और पत्रकारिता, साहित्य, भाषा हिन्दी के क्षेत्र में ऐसी नई रचना करे जिसका व्याकरण अणुव्रत बन जाए।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने फरमाया कि लेखक के पास शब्द की शक्ति होती है और वे अपनी लेखन शक्ति को पुष्ट करें तो सहज ही हिंसा और अनैतिकता के अंधकार से मुक्ति मिल सकती है। उन्होंने महात्मा गांधी को भी एक जैन मुनि द्वारा इंग्लैण्ड जाते समय तीन व्रतों की शपथ दिलवाकर एक तरह से अणुव्रत रूपी सुरक्षा कवच प्रदान करने का उद्धरण प्रस्तुत किया।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार वेद प्रताप वैदिक ने कहा कि अणुव्रत को केवल संकल्प पत्र भरवाकर लागू नहीं किया जा सकता ये तो ऐसे व्रत हैं जिन्हें अपने स्वभाव का हिस्सा बनाया जाना आवश्यक है। यदि यह सम्भव हो गया तो अणुबम और भारत को महाशक्ति बनाने से भी एक बड़ा काम हो जाएगा। उन्होंने कहा कि यदि सारे लेखक ये ठान लें कि कोई भी विपत्ति आने पर उनके कदम नहीं डिगेंगे तो समाज में सुधार अवश्य सम्भव है और यह देश संस्कारित होकर स्वर्ग बन जाएगा। इकराम राजस्थानी ने कहा कि लेखक किसी जाति या धर्म का नहीं होता वह तो मानव मात्र का होता है।

उन्होंने अणुव्रत को एक जुनून के रूप में लेकर कलम चलाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि मानवता का प्रेम जगाने और लोगों का हृदय परिवर्तन करने में लेखकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। सम्मेलन के मुख्य अतिथि डॉ. धर्मपाल मैनी ने अणुव्रतों को नैतिकता की आधार भूमि बताते हुए कहा कि इससे हमारा निर्माण होता है। आध्यात्मिक, नैतिकता व मूल्य परायण चेतना जाग्रत होती है। डॉ. मैनी ने अपनी पुस्तक मानव मूल्य व्याख्या कोश के छह खण्डों को आचार्य महाप्रज्ञ को समर्पित किया।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने काल के अनन्त प्रवाह के महत्व को बताते हुए कहा कि केवल महापुरुष ही काल की धारा को बदल सकते हैं।

कार्यक्रम मुनिश्री महावीर के मंगल संगान के साथ प्रारंभ हुआ। श्री विजयसिंह बरमेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। स्थानीय अणुव्रत समिति के महामंत्री डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने अतिथियों का परिचय दिया। प्रवास समिति के अध्यक्ष श्री शांतिलाल बरमेचा, डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अतिथियों का साहित्य भेंट कर सम्मान किया। संयोजन डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने किया। सम्मेलन का दूसरा परिचय सत्र मुनि सुखलाल के सान्निध्य एवं लेखक सुरेश पण्डित की अध्यक्षता में आयोजित किया गया जिसमें सभी लेखकों ने अपना परिचय प्रस्तुत किया। सुरेश पण्डित ने कहा कि साहित्यकार या लेखक ने कभी कोई क्रांति नहीं की लेकिन वे क्रांति के जनक अवश्य बनते हैं क्योंकि उनके द्वारा तैयार माहौल समाज को बदलने की शक्ति रखता है। उन्होंने अणुव्रत के लिए रचनात्मक लेखन पर जोर दिया। डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संयोजन वीरेन्द्र भाटी मंगल ने किया।